International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-12-2024, Accepted: 16-01-2025, Published: 31-01-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 32-34

चन्द्रकांता की कहानियाँः स्त्री समानता के धरातल पर

वीरेन्द्र किस्कू
हिंदी विभाग, विश्व भारती शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
चन्द्रकांता की कहानियों में "धरातल पर स्त्रियों की समानता पर विचार" विभिन्न रचनाकारों से पूर्णतया अलग है। चन्द्रकांता का विचार हैं कि मेरे उपन्यासों एवं कहानियों में महत्त्वपूर्ण स्त्रियों की समानता एवं कल्पनाएँ हैं। अपनी कहानियों में वे महिलाओं के अधिकारों, शोषण और विद्रोहों की पड़ताल करते हैं, तथा समय के साथ विकसित होते समाज के संदर्भ में महिलाओं की समानता के संबंध में उनके विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हैं।
चन्द्रकांता के अनुसार, "महाश्वेता देवी की तरह, मुझे लगता है कि महिला लेखकों के लिए नारीवाद के तर्कों में उलझने के बजाय वास्तविक धरातल, जमीनीं सच्चाईयों के साथ देखना जरूरी है, विश्व जगत में रहने वाली महिलाओं की जाँच करना महत्त्वपूर्ण है। महिला लेखकों का विषय इन दिनों युद्ध क्षेत्र में बदल रहा है। कुछ बुद्धिजीवी नारीवाद की वकालत करते हैं, जबकि अन्य इसे परिवार के लिए खतरा मानते हैं। मेरी राय में, दोनों ही अनावश्यक हैं।"[1] वैचारिक स्तर पर, चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों को धरातल पर मजबूत, आत्म–जागरूक और प्रबुद्ध के रूप में दिखाया है, और उनमें जीवन के प्रति अटूट दृढ़ संकल्प है। इस संबंध में उनका दृष्टिकोण है कि "महिलाओं को अपनी क्षमताओं को विकसित करने में कठिनाई होती है। हालाँकि, वह किसी भी स्थिति में समाज के पुरुष को अस्वीकार नहीं करती है, वह केवल उनके बीच सम्मान का स्थान चाहती है।"[2]

मूल शब्दः पारिवारिक समस्या, दहेज प्रथा, स्त्री समस्या

समकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति के दो अलग–अलग प्रतिबिंब हैं। आधुनिक स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता, स्वतंत्र विचार, स्वतंत्र भावना और विकास के कदम उसकी मजबूत स्थिति को दर्शाते हैं; हालाँकि, पारंपरिक धारणाओं, पारंपरिक मान्यताओं और पुरुष अहंकार से विवश स्त्री की भावुकता और मानसिकता समाज में उनकी कमज़ोर शक्ति का प्रतिबिंब है।[3]

चन्द्रकांता की कहानियों में महिलाओं का एक अलग ही स्थान है। उनकी कहानियाँ समाज के इर्द–गिर्द घूमती रही हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने कई तरह के सामाजिक मुद्दों को दर्शाया है। उनका मुख्य लक्ष्य बदलते सामाजिक परिदृश्य, पर्यावरण और परिवार, समाज के भीतर पारस्परिक संबंधों को चित्रित करना भी रहा है। समाज की रीढ़ होने के बावजूद महिलाओं को हमेशा पुरुषों से कमतर समझा जाता रहा है। अपनी रचनाओं में इन परिस्थितियों को चित्रित करने के अलावा चन्द्रकांता इनके खिलाफ आवाज उठाती हैं। हिन्दी जगत में चन्द्रकांता को एक सफल लेखिका का भी रूप दिया गया है।

हिंदी साहित्य में सबसे प्रसिद्ध लेखिकाओं में से एक हैं– "चन्द्रकांता" आधुनिक प्रगतिशील लेखिका चन्द्रकांता ने कुछ उत्कृष्ट कहानियों का निर्माण किया है। वह आजादी के बाद की कहानियाँ बहुत अच्छे से कहती हैं। वह सिर्फ एक शानदार कहानीकार ही नहीं बल्कि एक अच्छी उपन्यासकार भी हैं। उन्होंने खुद को हिंदी में कहानीकार, उपन्यासकार और कवि के रूप में स्थापित किया है। सितंबर 1967 में, मासिक पत्रिका इमेजरी (हैदराबाद) ने उनकी पहली कहानी, "खून के रेश" प्रकाशित की। भारतीय संस्कृति और परंपराओं को चन्द्रकांता के मध्यवर्गीय जीवन के उपचार में एक प्राकृतिक और जैविक अभिव्यक्ति मिली है। उनका लेखन आम तौर पर मध्यवर्गीय जीवन के परिचय के रूप में काम करता है।[4]

कहानी की दुनिया में समानता हासिल करने के लिए आपको चन्द्रकांता पर गर्व होना चाहिए। उन्होंने हंड्रेड स्टोरीज को खत्म कर दिया जिसके साथ ही चन्द्रकांता ने स्त्री समानता पर आधारित अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन को प्राथमिकता दी है तथा जीवन के उतार–चढ़ाव से निपटने में स्त्रियों के संघर्ष, मानसिक स्थिति और बाधाओं को चित्रित किया है। इनकी कहानियों की विशेषता समय की गति के साथ–साथ समाज के स्वरूप में, उसकी गतिविधियों में, विचारों में, जीवन शैली समाज की विभिन्न सामाजिक प्रथाओं एवं स्त्री समस्याओं में, विविधता देखने को मिलती है।

चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में दहेज प्रथा का विस्तार दहेज देने और लेने वाले व्यक्ति, वर्गों समूहों का विरोध करके समाज को संस्कारित एवं जागरूक करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में भूमि पर समाज में स्वार्थ, संपत्ति और आकांक्षा की भूख दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। समाज के अंतर्गत वैवाहिक जीवन का स्वरूप विकृत होता जा रहा है, दहेज प्रथा ने इस समस्या को और भी अधिक जटिल बनाने का कार्य किया है। समय के साथ–साथ यह प्रथा विवाह की एक अनिवार्य संस्कृति में बदलती जा रही है। जो समाज में चरम पर मानी जाती हैं। यदि स्त्री पक्ष दहेज की माँग को पूरा करने में असमर्थ होता है, तो स्त्री वर्ग घरेलू हिंसा, शोषण का शिकार होती है। समाजशास्त्र विश्वकोश के अनुसार "प्रतिस्पर्धा एवं प्रदर्शन ने इस प्रथा को एक सामाजिक बुराई में परिणित कर दिया।"[5] चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में किसी भी दृष्टिकोण से दहेज प्रथा को समाज संगत नहीं कहा है।

चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों के अंतर्गत प्रेम और विवाह, एक प्रथागत समारोह के कई पहलुओं पर जोर देकर, चन्द्रकांता ने अपने लेखन में मानव जीवन के लिए एक भावना के रूप में प्रेम के महत्व को प्रदर्शित किया है। समाज और दैनिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए, एक खुशहाल विवाहित जीवन की आवश्यकता है। हालाँकि, चन्द्रकांता ने अपने लेखन में एक संतुष्ट और समृद्ध विवाहित जीवन के कई तत्वों पर भी चर्चा की है।

वर्तमान समय के विकसित होते सामाजिक परिदृश्य में, प्रेम को केवल एक मानवीय भावना से अधिक के रूप में देखा जाता है

बल्कि, यह एक व्यवसाय और आकर्षण है। संक्षेप में, चन्द्रकांता की कहानियों में पारंपरिक और समकालीन वेश–भूषा की शैलियों में मिश्रण के माध्यम से बेरोजगारी के बारे में महिलाओं की चिंताओं को चित्रित किया है। चन्द्रकांता की कहानियाँ महिलाओं के आधार पर आधुनिक समय और समाज की स्थिति के लिए एक गहरी चिंता व्यक्त करती हैं।

चन्द्रकांता की कहानियाँ स्त्री समानता के धरातल पर समकालीन समय और समाज के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त करती हैं। उनकी इस चिन्ता के केन्द्र में स्त्री भी है। स्त्री सामाजिक जीवन में दहेज समस्या, परिवार व समाज द्वारा शोषण, विवाहेत्तर सम्बन्ध, प्रेम के नाम पर छल, शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न, तथा वृद्धावस्था में शारीरिक कष्ट, जैसी परिस्थितियों से गुजरती है। यह परिस्थितियाँ स्त्री के प्रतिकूल हैं। उसे जीवन में कठिन चुनौतियाँ देती हैं। परंतु वर्तमान समय की स्त्रियाँ इन समस्याओं से संघर्ष करती है। उससे लड़ने के लिए व्याकुल भी दिखती है। लोकगीत चन्द्रकांता की कहानियों की विशिष्टता है, इन लोकगीतों के माध्यम से समाज में धरातल भूमि पर स्त्रियों की स्थिति को चन्द्रकांता द्वारा बताया गया है। लोकगीतों का प्रयोग कर चन्द्रकांता ने कहानी को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाया है। इन लोकगीतों में स्त्री के दुःख–दर्द व स्वंय पर हुये कष्टों की स्ववृत्तांन्त भी निहित हैं। लोकगीतों के सन्दर्भ में चन्द्रकांता का विचार है "लोकगीत तो प्रदेश विशेष के होने के बावजूद मनुष्य की भावनाओं और राग–विराग से ही गुँथे होते हैं।"[6] इस दृष्टिकोण से चन्द्रकांता की कहानियों में धरातल पर स्त्री समानता एवं समाज में स्त्री वर्ग की स्थिति के बारे में दर्शाया गया है।

चन्द्रकांता की निम्नलिखित कहानियाँ

- सलाखों के पीछे,
- गलत लोगों के बीच,
- पोशनून की वापसी, दहलीज पर न्याय,
- ओ सोनकिसरी,
- कोठे पर कागा,
- सूरज के उगने तक,
- काली बर्फ,
- कथा नगर,
- बदलते हालात में,
- तैती बाई
- रात में सागर

चन्द्रकांता की लेखन–संबंधी गतिविधियाँ

चन्द्रकांता ने अपनी लेखनी में सभी विषयों को शामिल किया है। उन्होंने सत्य–आधारित अस्तित्व की एक अद्‌भुत छवि बनायी है। चूँकि सत्य सुनने का उनका तरीका है, इसलिए उन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा को इस हद तक विकसित किया है कि यह ज्ञान के लिए भी उपयोगी हो सकता है। चन्द्रकांता ने उपन्यासकार, कवि और कहानीकार के रूप में अपना नाम बनाया है। उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र कहानियाँ रही हैं, लेकिन उन्होंने अपनी कविता और उपन्यास लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य में विशिष्टता हासिल की है। चूँकि चन्द्रकांता प्राकृतिक दुनिया से प्यार करती हैं, इसलिए उनके लेखन में इसका सबसे अच्छा वर्णन है। ऐसा माना जाता है कि चन्द्रकांता जी हिंदी साहित्य में आतंकवाद को शामिल करने वाली पहली महिला लेखिका थीं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से आतंकवाद को एक ठहराव पर ला दिया है।

चन्द्रकांता की कहानियों में समाज के अंतर्गत स्त्री वर्ग

चन्द्रकांता की कहानियों में समाज की स्त्रियों द्वारा चलाए गए सामाजिक आंदोलन के परिणामस्वरूप कई कानून और नियम पारित किए गए हैं, फिर भी स्त्रियों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है। चन्द्रकांता की कहानियों के साहित्यिक कृति समाज में स्त्रियों की वर्तमान स्थिति को समझाने और व्यक्त करने का बहुत अच्छा काम करती है। हालाँकि, कई स्थितियों में इन कृत्यों को प्रभावी ढंग से व्यवहार में नहीं लाया जा सका। प्रसिद्ध कहानीकार चन्द्रकांता अपनी कहानियों में "इन कानूनों और कृत्यों के बारे में लिखती हैं। यह सच है कि भारतीय संविधान द्वारा उन्हें कई अधिकार दिए जाने के बावजूद भी स्त्री आज भी घर, परिवार और समाज में शोषण से बच नहीं पाती हैं। ज्ञान के प्रसार ने स्त्रियों में स्वाधिकार और स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, तो पारिवारिक, सामजिक शोषण के खिलाफ आवाजें उठने लगी। जाहिर है, साहित्य में भी उसकी गूंज सुनाई पड़ने लगी।"[7]

संबधित साहित्य का अध्ययन

कीर्ति केसर के अनुसार, "चन्द्रकांता की कहानियों में नैतिक अवधारणाओं की परिभाषायें तेजी से बदल रही है। चन्द्रकांता अपने कथा साहित्य में अपनी जन्मभूमि कश्मीर एवं पंजाब में व्याप्त आतंकवाद और उस आतंकवाद से पीड़ित लोगों की दयनीय दशा का यथा–तथा अंकन प्रस्तुत करके साठोत्तर हिंदी कथाकारों में अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हुई है। कश्मीर की भूमि छूटने की पीड़ा की टीस उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में महसूस की जा सकती है, तो कश्मीर की वादियों, नदियों, दलानों, पहाड़ों और मैदानों की सुंदरता भी उनकी अनेक रचनाओं में रची–बसी हुई है। फूलों की सुगंध का मोह है, तो फलों की रसलता, जो यातना मेरे जीवन को सींचती है, जिसकी पहचान भी चन्द्रकांता की रचनाओं में अंकित है।"[8]

डॉ. ऊर्मिला गुप्ता के अनुसार, "विगत शताब्दियों में भारत में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को विशेष सामाजिक सुविधायें प्राप्त रही हैं, अतः साहित्य–क्षेत्र में चन्द्रकांता की कहानियों में प्रतिभा का यथोचित प्रसार हुआ है। इसके विपरीत स्त्रियाँ शिक्षा की अपर्याप्तता, अध्ययन की सीमाओं, कार्य–क्षेत्र में व्यापकता के अभाव, पारिवारिक उत्तरदायित्वों, समाज और परिवार के विरोध एवं वांछित प्रोत्साहन के अभाव के कारण साहित्य–रचना में उतनी कृतकार्य नहीं हो सकीं।"[9]

शरणागत दीनार्त के अनुसार, "चन्द्रकांता की कहानियों के अंतर्गत वास्तव में निष्कासितों की व्यथा वर्णित है। उन्हें जो कष्ट हुआ है, उसे भरना असंभव है। निष्कासन की व्यथा भोगती रचनाकार चन्द्रकांता, निष्कासितों को हुए कष्टों को रेखांकित करती हैं, वैश्वीकरण के तमाम प्रभावों के बावजूद आज भी घर, हमारे नाम, हमारी पहचान और अस्मिता का प्रतीक है। एक जमीन का टुकड़ा ही नहीं छूटता विस्थापितों से उनकी पहचान की पूरी सृष्टि दह जाती है।"[10] निष्कासितों की समस्याओं से भलीभाँति परिचित चन्द्रकांता ने निष्कासितों की समस्याओं के प्रति सरकार की निष्क्रियता पर तीखा रोष शरणागत दीनार्त की कहानी में रेखांकित किया है।[11]

देवकीनंदन खत्री के अनुसार, "चन्द्रकांता की कहानियों में उत्सुकता और कौतुहल केंद्रीय सूत्र हैं। उत्सुकता की धार को पैना करने के लिए चन्द्रकांता ने अपने कथा सूत्र को चरम सीमा तक ले जाकर अधूरा ही छोड़ दिया है और फिर दूसरी कथा सूत्र को पकड़ लिया है। आगे बढ़ने के साथ–साथ सभी कथा–सूत्रों का चन्द्रकांता खूबसूरत संयोजन भी करती चलती है।"[12]

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य चन्द्रकांता की कहानियों में निहित धरातल पर स्त्रियों की समानता पर विचार करना है, स्त्रियों की सामाजिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक परिवेश से लोगों को अवगत कराना है। साथ ही स्त्री वर्ग की समस्या किस प्रकार से धरातल के जनजीवन को प्रभावित करती है, इस तथ्य को भी उजागर करना है।

शोध परिकल्पनाएँ

चन्द्रकांता की कहानियों में स्त्री समानता के धरातल पर विभिन्न संभावित अवधारणाओं का अध्ययन करने के लिए कई संभावनाएँ हो सकती हैं। यहाँ कुछ संभावित परिकल्पनाएँ इस प्रकार से हैं–

1. चन्द्रकांता की कहानियों में स्त्री चरित्रों की शक्ति और स्वतंत्रता को कैसे प्रकट किया जायेगा।
2. चन्द्रकांता की कहानियों में स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक भूमिका को दिखाया जायेगा।
3. चन्द्रकांता की कहानियों में क्या किसी पारंपरिक भूमिका के विपरीत एक विशेष स्त्री चरित्र का प्रतिनिधित्व किया जायेगा।
4. कहानियों में समाज में जेंडर रोल की परंपरा का अध्ययन कैसे किया गया है? क्या यह रोल निर्धारित हैं या उन्हें छोड़ दिया गया है यह स्पष्ट किया जायेगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध प्रविधि को वैज्ञानिक तरीके से सुनिश्चित क्रमानुसार सम्पन्न किया गया है। चन्द्रकांता के परिवेश, व्यक्तित्व तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया गया। विश्लेषण करने के बाद औपान्यासिक शिल्पगत सौंदर्य की विवेचना करते हुए लेखिका की वैचारिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए कहानियों में व्यक्त उनकी गहन चिन्तन दृष्टि का अध्ययन किया गया है। तत्पश्चात् सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में चन्द्रकांता की कहानियों का विस्तृत विवेचन करते हुए उनके समकालीन महिला रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन कर चन्द्रकांता के अविस्मरणीय साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला गया है।

इस प्रकार प्रस्तावित शोध कार्य को वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए क्रमबद्ध रूप में पूर्ण किया गया है। शोध के अन्तर्गत विभिन्न संदर्भ ग्रंथों को देखते हुये समीक्षात्मक, आलोचनात्मक, विवेचनात्मक, विचारात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य के लिए संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, शब्दकोश, विश्वकोश के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्य परक सामग्री को एकत्रित किया गया है। समाज में महिला पात्रों की भूमिका और कहानियों में महिला समानता के चित्रण का आकलन किया गया है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध लेखिका, चन्द्रकांता की कहानियाँः स्त्री समानता के धरातल पर किया गया है।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत चन्द्रकांता के कथा साहित्य को उनकी कहानियों में स्त्री समानता के आधार पर बनाया गया है।

निष्कर्ष

चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में नारी के पारम्परिक और आधुनिक वेशभूषा को दर्शाया है। जिसके अन्तर्गत पाया गया कि– तेजी से आधुनिकीकरण प्रक्रिया की तरफ बढ़ रहे समाज में स्त्री के मन में अपनी पारम्परिक वेशभूषा के प्रति आकर्षण समाप्त हो रहा है। यह अपने परिवेश के प्रति चिन्तित हैं। उनका साहित्य भी अनुभूति और यथार्थ के संयोग से निर्मित है। ऐसी स्थिति में चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं से संघर्ष करती स्त्री को चित्रित किया है। मनुष्य के आर्थिक लोभ ने समाज में अनेक समस्याओं को जन्म दिया हैं। इसमें दहेज एक प्रमुख समस्या है। समग्र विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में स्त्री विमर्श का चित्रण व्यापक रूप से किया है। उन्होंने स्त्री द्वारा पुरूष प्रधान समाज में नारी की स्वतंत्रता में विरोधी समाज को अपने विचारों एवं कहानियों में व्यक्त किया है। चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में वैवाहिक जीवन की विफलताओं को भी महत्त्वपूर्ण विषय बनाया है साथ ही सुखद और सफल दाम्पत्य जीवन के पहलुओं पर भी विचार किया है।

प्रस्तावित शोध कार्य में सशक्त लेखिका चन्द्रकांता के व्यक्तित्व तथा जीवनानुभवों से प्रभावित उनकी कहानियों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। जिससे लेखिका के अंर्तमन पर सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवेश के गहन प्रभाव को समझने में सहायता मिली है। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में चन्द्रकांता की कहानियों में पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं तथा अनेकानेक प्रश्नों पर प्रकाश डालकर लेखिका के सामाजिक जागरूकता के संदेश को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है, साथ ही व्यापक विजन के ही कारण इनकी कहानियाँ स्त्री जीवन के प्रत्येक कोण का स्पर्श करती आयी हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन से जुड़ी हुई, उस प्रत्येक समस्या को चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों में सम्मिलित किया है। जिसने मनुष्य की संवेदना को प्रभावित किया है। इन्होंने अपनी कहानियों में वैश्वीकरण और आधुनिकताबोध के प्रभाव से लेकर एक वृहत्तर समाज व राष्ट्र के सुख–दुःख तथा संघर्ष को शब्दबद्ध करके कहानी विधा को धारदार व समृद्ध बनाया है।

संदर्भ सूची

1. चन्द्रकांता, 2008 मेरे भोज पत्र, प्रथम संस्करण, अरु पब्लिकेशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली, पृ.स. 59
2. चन्द्रकांता, 2008 मेरे भोज पत्र, प्रथम संस्करण, अरु पब्लिकेशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली, पृ.स. 60
3. डॉ. अशोक कुमार मीणा, 2016, वर्तमान समाज में स्त्रियों की स्थिति (हिन्दी कहानियों के विशेष संदर्भ में) गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर राजस्थान पृ.स. 302
4. चन्द्रकांता, 1962 सूरज उगने तक भूमिका पृ. स. 07
5. हरिकृष्ण रावत, 2002, समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, पुनर्मुद्रण पृ.स. 98
6. चन्द्रकांता, 2015, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन कानपुर उ0 प्र0, प्रथम संस्करण, पृ.स. 68
7. नैतिक अवधारणाओं की परिभाषायें तेजी से बदल रही है, चन्द्रकांता, कीर्ति केसर, प्रश्नों के दायरे में, चन्द्रकांता, पृ.स. 24
8. हिंदी–कथा–साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ. उर्मिला गुप्ता, पृ.11
9. मेरे भोज पत्र, चन्द्रकांता पृ.स. 125
10. शरणागत दीनार्त, 2013, काली बर्फ (कहानी संग्रह), चन्द्रकांता, पृ.स. 12
11. देवकीनंदन खत्रीः मधुरेश, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली पृ.स. 26